S.M. Zaheer Alam Teacher's Training College

BAHERA, DARBHANGA

L. N. MITHILA UNIVERSITY

KAMESHWAR NAGAR, DARBHANGA (BIHAR)

SESSIONAL WORK ASSIGNMENT

19/20

Course.-8.....

Topic.....

Subject....Knowledge and Curriculum.....

College Roll No. .....71(2121842).....

B.Ed. Session...(2020-2022)...Year.....

Reg. No. ...1321420352.....Year....2013.....

Sanjay Kumar Rai

Signature of Examiner

Smita

Signature of Supervisor

Scanned with OKEN Scanner

Q01. आदर्शवाद ने शिक्षण विधियों की अपेक्षा शिक्षा के उद्देश्य के संबंध में अधिक योगदान दिया है? क्या आप इस कथन से सहमत है?

Ans परिचय :- आदर्शवाद ने शिक्षा को बहुत अधिक प्रभावित किया है। आदर्शवादी दर्शन को शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिपादित करने का श्रेय प्लेटो, पेस्तालाजी तथा फ्रोबिल आदि शिक्षाशास्त्रियों को जाता है। इस बीच में अनेक परिवर्तन हुए हैं अनेक विचारधाराओं ने जन्म लिया है और उन्होंने शिक्षा पर अपना-अपना प्रभाव डाला है। लेकिन आज भी शिक्षा किसी-न-किसी रूप में आदर्शवाद से प्रभावित है।

* शिक्षा का सम्प्रत्यय :- आदर्शवादी शिक्षा को ज्ञान एवं प्रक्रिया दोनों रूपों में स्वीकार करते हैं। प्राचीन आदर्शवादी प्रायः ज्ञान और शिक्षा में भेद नहीं करते थे।

प्लेटो के अनुसार :- "शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि योग्य वे हैं।" परन्तु आधुनिक युग के आदर्शवादी शिक्षा को प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हैं।

हरबार्ट के अनुसार — "शिक्षा वह

प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सद्गुणों की प्राप्ति होती है।

* आदर्शवाद तथा शिक्षा के उद्देश्य -

1. शारीरिक एवं मानसिक विकास :- आदर्शवादी सर्वप्रथम मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर बल देते हैं। कोई व्यक्ति अपना शारीरिक एवं मानसिक विकास तभी कर सकता है। जब वह ऐसा आहार ले एवं ऐसे विचार करे जो शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए सहकारी हो। अन्यथा आहार एवं विचार पर नियन्त्रण रखे। परन्तु शारीरिक एवं मानसिक विकास कैसे हो, यह बात उन्हें मान्य नहीं है। उनके लिए शरीर एवं मन आध्यात्मिक पूर्णता की अनुभूति के साधन हैं स्वयं में साध्य नहीं।

2. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास :- आध्यात्मिक पूर्णता की अनुभूति के मार्ग का दूसरा सोपान सामाजिक 'स्व' है। अतः शिक्षा को मनुष्य के सामाजिक स्व का विकास करना चाहिए। सामाजिक 'स्व' के विकास का अर्थ है मनुष्य समाज द्वारा स्वीकृत नियमों का पालन करता है। उसकी पसन्द सामाजिक स्वीकृति-अस्वीकृति पर निर्भर करती है। इस स्तर पर मनुष्य अपने प्राकृतिक स्व

नियन्त्रण करता है। आदर्शवादी यह मानते हैं कि मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संस्कृति है।

3. नैतिक एवं चारित्रिक विकास :- आदर्शवादी दार्शनिक मनुष्य के सामाजिक 'स्व' के उच्चतम विकास के लिए उसके नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर बल देते हैं। उनका स्पष्टीकरण है कि जब मनुष्य सामाजिक नियमों में आस्था रखता है तो उसका पालन स्वेच्छा से करता है तब हम कहते हैं कि उसका नैतिक विकास हो गया। और जब किसी किसी भी परिस्थिति में वह सद्मार्ग पर अडिग रहा है तो हम कहते हैं कि उसका चारित्रिक विकास हो गया है।

4. पवित्र जीवन की तैयारी कराना :- आदर्शवादियों के अनुसार बालक में आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति श्रद्धा उत्पादन करने के लिए उन सभी परिस्थितियों का सृजन करना आवश्यक है। जिनमें रहते हुए वह पवित्र जीवन व्यतीत करके आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर सके। अतः शिक्षा का एक उद्देश्य यह भी है कि वह बालक को पवित्र जीवन जीने के लिए तैयार करे। फ्रोबिल के अनुसार - "शिक्षा का उद्देश्य है - सन्तिपूर्ण, पवित्र तथा कलंक रहित जीवन की प्राप्ति कराना।"